REGD. NO. L. 2077

वर्ष १]

भक्ति

अङ्क १]

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥

भगवद्भक्ति विमुखानां शास्त्र गर्तेषु मुह्यताम् ।
न ज्ञानं न च मोक्षः स्यात् तेषां जन्म शतैरपि ॥

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥

सम्पादक—स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती ।

निम्न लिखित महानुभाओं ने भक्ति के संरक्षक बन कर भक्ति को अपने की कृपा की है।

१. राय साहब श्री बल्लभ प्रसाद जी रईस आनरेरी मजिस्ट्रेट गुलजारबाग, पटना १०१)

२. राव बहादुर लेफ्टेनेन्ट राव बलवीर सिंह जी ओ. बी. ई. रामपुरा ५१)

३. श्रीमान् भाय भाई गनेशीलाल जी आरमी मिनिस्टर अलवर राज्य ५१)

४ राव श्रीराम रईस नांगल २५)

५. म० शोभाराम जी डूंगरवास २५)

६. चौ० धर्मसिंह जी मलिक नायब तहसीलदार रेवाड़ी २५)

७. राव निहालसिंह जी सूबेदार पाल्हावास २५)

८. बा० स्वयम्बरदास जी बी० ए० इन्स्पेक्टर आफ स्कूल्स पटना यू० पी०। २५)

९. महाशय शादीराम जी मस्तापुर, रेवाड़ी। ५)

ॐ

"कलौतु केवला भक्तिः"।

वार्षिक चन्दा २)

भक्ति

एक प्रति का ।)

जनता में भगवद्भक्ति भाव को जागृत करने वाली मासिक पत्रिका।

वर्ष १ } भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा, चैत्र पूर्णिमा सं० १९८४। { अङ्क ७

॥ मंगलाचरणम् ॥

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्म तत्वं, सच्चित्सुखं परमहंसगतिं तुरीयम्
यत् स्वप्न जागर सुषुप्त मवैति नित्यं, तद्ब्रह्म निष्कलमहं न च भूतसंघः॥ १

हृदय में प्रकाशमान् सत् चित् सुख स्वरूप परमहंसों की गति (प्राप्य) जो तुरीय आत्म तत्व है उसको मैं प्रातः काल स्मरण करता हूं। जो नित्य है, स्वप्न जाग्रत और सुषुप्ति को जानता है वह निरवयव ब्रह्म मैं हूं भूतों का समूह मैं नहीं हूं॥ १ ॥

प्रातर्भजामि मनसो वचसामगम्यं, वाचोविभान्ति निखिला यदनुग्रहेण।
यन्नेतिनेति वचनैर्निगमा अवोचु, स्तं देव देव मजमच्युत माहुरग्र्यम् ॥ २

मन और वाणी के अगम्य को मैं प्रातः काल भजता हूं जिस के अनुग्रह से सब वाणियां प्रतीत होती हैं। वेदों ने जिस को "नेति नेति वचनों से कहा है, उसे देव, देवता, अजन्मा अविनाशी और श्रेष्ठ कहते हैं ॥ २ ॥

प्रातर्नमामि तमसः परमर्कवर्णं । पूर्णं सनातनपदं पुरुषोत्तममाख्यम् ॥
यस्मिन्निदं जगदशेषमशेषमूर्त्तौ, रज्वां भुजंगममिव प्रतिभासितं वै ॥ ३ ॥

माया रूपी अन्धकार से परे सूर्य के सदृश वर्ण वाले (अर्थात् प्रकाशस्वरूप) पुरुषोत्तम नाम वाले, पूर्ण सनातन पद को मैं प्रातः काल नमस्कार करता हूं जिस सर्व रूप में सारा जगत् रज्जु में सर्प की तरह भासा हुआ है ॥ ३ ॥

प्रातर्नमामि महिषा सुर चण्ड मुंड, शुम्भा सुर प्रमुख दैत्य विनाश दक्षाम् ।
ब्रह्मेन्द्र रुद्र मुनिमोहन शील लोलाम्, चंडीं समस्त सुरमूर्त्तिमनेक रूपाम् ॥४

महिषासुर, चण्डमुण्ड, सुम्भासुर आदिधान दैत्यों के नाश करने में चतुर ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र, मुनियों के मोहन में चतुर समस्त देवताओं की मूर्ती अनेकरूपा चण्डी को प्रातःकाल स्मरण करता हूं ॥ ४ ॥

प्रातर्नमामि मनसा वचसा च मूर्ध्ना, पादारविन्द युगलं परमस्य पुंसः ।
नारायणस्य नरकार्णव तारणस्य पारयणो निपुण विप्र परायणस्य ॥५ ॥

नरक रूपी समुद्र से पार उतारने वाले । शास्त्र ज्ञान निपुण विप्र तारक परम पुरुष नारायण के पादारविन्द युगल को मन वचन मस्तक से प्रातः काल नमस्कार ही करता हूं ॥ ५ ॥

प्रातः स्मरामि भव भीति महार्ति शान्त्ये,
नारायणं गरुड़वाहनमब्ज नाभम् ।
ग्राहाभिभूत वरवारण मुक्ति हेतुं ।
चक्रायुधं तरुण वारिज पत्रनेत्रम् ॥ ६ ॥

ग्राह से अभिभूत गजेन्द्र के छुटाने वाले, चक्र आयुध से विभूषित, नूतन कमल सदृश नेत्र कमल नाभ, गरुड वाहन नारायण को संसार के भय और महापीड़ा की शान्ति के लिये प्रातकाल स्मरण करता हूं ॥ ६ ॥

प्रातर्भजामि भजतामभयंकरं तं, प्राक् सर्व जन्मकृत पाप भयापहत्यै ।
योग्राह वक्त्र पतितांघ्रि गजेन्द्र घोरं, शोक प्रणाशन करोधृत शंख चक्रः ७

जो ग्राह के मुख में पतित गजेन्द्र का घोर शोक नाश करने वाले शंख चक्र गदा धारण करने वाले भक्त सुखदायक परमेश्वर को पूर्व जन्म कृत सम्पूर्ण दुरित नाशार्थ प्रातःकाल स्मरण करता हूं ॥ ७ ॥

प्रातर्नमामि चतुरानन वन्द्यमान, मिच्छानुकूल मखिलञ्च वरं ददानम् ।
तं तुन्दिलं द्विरसनाधिप यज्ञ सूत्रं, पुत्रं विलास चतुरं शिवयोः शिवाय ॥

ब्रह्मा से वन्द्यमान इच्छानुकूल अखिल वरदान देने वाले लम्बोदर शेषनाग यज्ञसूत्र शोभित विलास में चतुर पार्वती पुत्र गणेश और शिव को प्रातः स्मरण करता हूं ॥ ८ ॥

देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतो खिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरे देवी चराचरस्य ॥ ९ ॥

दुःखितों के दुःख को हटाने वाली हे भगवती देवी प्रसन्न हो हे अखिल जगत की जननी प्रसन्न हो हे विश्वेश्वरी प्रसन्न हो हे चराचर विश्व की ईश्वरी देवी तू विश्व की रक्षा कर ॥९

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां
न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः ।
गो ब्राह्मणेभ्यः शुभ मस्तु नित्यं
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥ १० ॥

प्रजाओं के लिये कल्याण हो पृथिवीपति न्याय मार्ग से पृथ्वि की पालना करें गौ और

ब्राह्मणों के लिये शुभ हो सम्पूर्ण लोक सदा सुखी हों ॥ १० ॥

नमस्ते सते ते जगत् कारणाय।
नमस्ते चिते सर्व-लोकाश्रयाय ॥
नमोऽद्वैत तत्वाय मुक्ति प्रदाय ।
नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥ ११ ॥

जगत् के कारण सत स्वरूप ब्रह्म के लिये नमस्कार हो । सर्व लोकाश्रय चिद्रूप ब्रह्म के लिये नमस्कार हो मुक्ति प्रद अद्वैत तत्व के लिये नमस्कार हो सर्व व्यापी नित्य ब्रह्म के लिये नमस्कार हो ॥ ११ ॥

पिण्डे सो ब्रह्मांडे।

(ले० श्री० पंडित रघुनाथ स्वामी नरेला)

पञ्चनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशो भवत् सरित् ॥

(यजु० अ० ३४ मं० ११)

यह देश सब प्रकार की विद्या और ज्ञान से सरित अर्थात् शोभायमान होता है जहां सरस्वती के पांच स्रोतों से पांच धारा निकल कर अपना जल डालती हैं सरस्वती के पांच स्रोत ये हैं:-

पुस्तक मन्तःकरणं गुरु शिष्यौ तथैव च ।
गुण ग्रहीता ख्याता च पञ्च स्रोतः सरस्वती

पुस्तक, अन्तःकरण, गुरु, शिष्य, और मन, जो इनके गुणोंका गुण ग्राही है। पुनः महर्षियों ने पुस्तकों के भी पांच भाग विभक्त किये हैं यथाः-

ब्रह्माण्डपिण्डनादश्च विन्दु रकार मेव च ।
पञ्च पुस्तकान्याहुर्योग शास्त्र विशारदाः ॥

ब्रह्माण्ड, पिण्ड, अर्थात, मनुष्य (शरीर) हिन्दु, और और अक्षर योगशास्त्र वेत्ताओं ने ये पांच ही पुस्तक माने हैं:-

भक्ति के पाठकों की जिज्ञासार्थ उन में से प्रथम पिण्ड के सम्बन्ध में लिखते हैं

भुवनानि च सर्वाणि पर्वत द्वीप सागराः ।
आदित्याद्या ग्रहाः सन्ति शरीरे पारमार्थिके॥

इस पारमार्थिक शरीर में अर्थात् मनुष्य शरीर में सबभुवन और पर्वतद्वीप सागर आदित्य आदि समस्त ग्रह विद्यमान है। इस शरीर में ६ चक्र हैं, जितने गुण ब्रह्माण्ड में कहे हैं उतने ही गुण इस पिण्ड में हैं: जैसे आधार चक्र गुदा का है। स्वाधिष्ठान चक्र लिङ्ग का चक्र है। मणि पूरक नाभि का है। अनाहत चक्र हृदय का। कण्ठ मूल में विशुद्धि चक्र है और आज्ञा चक्र मस्तक का है।

पारमार्थिक देहेहि षट् चक्राणि भवन्ति हि।
ब्रह्माण्डे ये गुणाः प्रोक्तास्तेन्यस्मिन्नैव संस्थिताः

योगियों के धारण में आस्पद के जो गुण हैं वे मैं आप के समक्षनिवेदन करता हूं जिन की भावना करके जीव विराट रूप के भजन वाला होता है। अब उस विराट रूपी को कहते हैं।

पादाधस्तात्तलं ज्ञेयं पादोर्ध्वं वितलं यथा ।
जानुतो सुतलं विद्धि सक्थि देशे महातलम्
तलातलं सक्थि मूले गुह्य देशे रसातलम् ।
पातालं कटि संस्थंच सप्तलोकाः प्रकीर्तिताः

पैरों के नीचे तल लोक, पाओं के ऊपर वितल, और घुटनों में सुतल जानिये। सक्थि देश में महातल जानो। और सक्थि के मूल में तलातल। और गुह्य देश में रसातल। और कटि में पाताल। ये सात लोक जानो।

भूर्लोकं नाभि मध्येतु भुवर्लोकं तदूर्ध्वके ।
स्वर्लोकं हृदये विद्यात् कण्ठदेशे महस्तथा॥
जन लोकं वक्त्र देशे तपो लोकं ललाटके ।
सत्य लोकं ब्रह्मरन्ध्रे भुवनानि चतुर्दश ।

नाभि के मध्य में भू लोक, उसके ऊपर भुवर्लोक, और हृदय में स्वर्लोक जानो, कण्ठ देश में महर्लोक, मुख में जन लोक, ललाट में तप लोक और ब्रह्मरन्ध्र में सत्यलोक जानो ये १४ भुवन हुए इसी प्रकार समस्त पर्वतः—

त्रिकोणे संस्थितो मेरुरधः कोणे च मन्दरः ।
दक्ष कोणे च कैलासो वाम कोणे हिमाचलः
निषधश्चोर्ध्व रेखायां दक्षायां गन्धमादनः
रमणो वामरेखायां सप्तैते कुलपर्वताः॥

त्रिकोण में मेरु स्थित है, और नीचे के कोण में मन्दराचल पर्वत है। और दक्षिण में कैलास। और वायव्य कोण में हिमाचल है। और ऊर्ध्व रेखा में निषध पर्वत। और दक्षिण रेखामें गन्ध मादन पर्वत है। और वाम रेखामें रहणाचल पर्वत है। ये सप्त कुल पर्वत शरीर में कहे हैं।

इसी प्रकार सप्त द्वीप भी इसी शरीर में स्थित है:—

अस्थि स्थाने भवेज्जम्बुःशाको मज्जासु संस्थित
कुश द्वीपः स्थितो मांसे क्रौञ्चद्वीपः शिरासुचः
त्वचायां शाल्मली द्वीपो गो मेदो रोम सञ्चये
नखस्थं पुष्करं विद्यात् सागरास्तदनन्तरम्

हड्डियों के स्थान में जम्बु द्वीप। और मज्जा में शाक द्वीप । और मांस में कुश द्वीप और शिराओं में क्रौंच द्वीप स्थित है। त्वचा में शाल्मली द्वीप। और रोम समूह में गोमेद द्वीप । नख में पुष्कर द्वीप स्थित है

अब सप्त सागरों को कथन करते हैं:—

क्षारो दोहि भवेन्मूत्रे
　　क्षीरे क्षीरोद सागरः ।
सुरोदधिं श्लेष्म संस्थो
　　मज्जायांघृतसागरः ॥
रसोदधिं रसे विद्या
　　च्छोणिते दधि सागरः ।
स्वादु दोलम्बिका स्थाने
　　जानीया द्विनता सुत ॥

खारी समुद्र मूत्र में स्थित है, और दूध में दूध का समुद्र, और सुरा समुद्र श्लेष्मा में और मज्जा में घृत का समुद्र स्थित है, रस में रस का समुद्र । रुधिर में दही का समुद्र स्थित जानिये । हे विनता के पुत्र ! स्वादिष्ट जल लम्बिका जो कण्ठ के अन्दर होता है उस के स्थान में जानिये ।

इसी प्रकार सम्पूर्ण ग्रह भी इस शरीर में स्थित हैं ।

नाद चक्रे स्थितः सूर्यो बिन्दु चक्रे च चन्द्रमा।
लोचनस्थो कुजोज्ञेयो, हृदयेज्ञः प्रकीर्तितः ॥
विष्णुस्थाने गुरुंविद्याच्छुक्रे शुक्रो व्यवस्थितः ।
नाभिस्थाने स्थितो मन्दो मुखे राहुःप्रकीर्तितः

नाद चक्र में सूर्य स्थित है, और बिन्दु चक्र में चन्द्रमा स्थित है, और हृदय में बुध स्थित है, नाभि गोल में गुरु को स्थित जानो, और शुक्र में शुक्र स्थित है, और नाभि के स्थान में शनैश्चर, और मुख में राहु स्थित है तथा वायु के स्थान में केतु स्थित है। इस प्रकार शरीर में ग्रह मण्डल हैं। इस प्रकार सर्वस्व रूप से अपने तनु का चिन्तवन करे। सर्वदा प्रभात समय में पद्मासन में स्थित हो कर षट् चक्रों का चिन्तवन करे। और अजपा जाप के क्रम को चिन्तवन करे। मुनियों को मोक्ष देने वाला अजपा जाप गायत्री है इसके सङ्कल्प मात्र से सब पाप छूट जाते हैं इसी अजपा जाप के प्रभाव से जीव जीव भाव को छोड़ देता है।

षट् चक्रों को मूलाधार में, लिङ्ग देश में, नाभि में, हृदय में, कंठ में, भौंहों में और ब्रह्म रन्ध्र में क्रम से चिन्तन करे। ब्रह्म रन्ध्र से बाहर गए हुए सुषुम्ना नाम धाम का ध्यान करे, उस मार्ग में गए हुए जीव विष्णु के परम पद को प्राप्त होते हैं। तदनन्तर चिंतवन किया स्वयं ज्योति स्वरूप जो सर्वदा आनन्द मय है उस का ब्रह्म मुहूर्त में सदा ध्यान करे ।

एवं गुरूपदेशेन मनो निश्चलतां नयेत् ।
न तु स्वेन प्रयत्नेन तद्विना पतनं भवेत् ॥

इस प्रकार सद्गुरु के चरणों की कृपा रूप उपदेश के बिना इस संसार सागर में बार २ पतन होता है अर्थात् जन्म मरण रूप बन्धन में पड़ता है । अतः दया ग्रहण करनी परमावश्यकीय है । दया ग्रहण कर के अन्तर्याग आरम्भ करे स्नान सन्ध्यादि से अनन्तर हरि हरादिका पूजनादि अन्तर्मुखी वृत्तिसे करे परन्तु देहाभिमानियोंकी अन्तर्मुखी वृत्ति होनी कठिन है अतएव उन के लिये मेरी भक्ति सहज में मोक्ष देने वाली है संसारी पुरुषों के लिये भक्तिमार्ग कल्याणकारी मार्ग है ।

भजन

अब ना रहूंगी राम अटकी,
म्हारी लगी जो राम से प्रीति ॥ टेक ॥

मन्दिर जा चरणामृत लेसी,
कपटी लोगां ने अटकी ।
ठाकुर जी आगे नृत्य करूं थी,
ताल बजाऊँ और चुटकी ॥ १॥
राजनीति सार की न जानी,
साधाँ रे संग अटकी ।
देवर जेठ की कान न मानी,
पड़ो घूंघट पर पटकी ॥ २ ॥
गहना गूंठी कभी न पहरूँ,
गल तुलसी की कण्ठी ।
नोसर हार गले रो त्यागो,
भूकी नागरनटकी ॥ ३ ॥
म्हाने सत्गुरु ऐसो मिल गयो,
लागी ज्ञान की गुटकी ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर,
आवागमन से छूटकी ॥ ४ ॥

भजन ।

सांवरिया गिरधारी,
मने थे चाकर राखो जी ॥टेक॥
नोकर रहसां चाकर रहसां,
नित उठ दर्शन पासां ।
वृन्दावन की कुंजगली में,
गोविन्द लीला गासां ॥ १ ॥
नौकरी में दरशन पासां,
सुमरन पासां खरचा ।
भाव भगत जंगेरी पासां,
तीन बात शमशेरी ॥ २ ॥
ऊंचे ऊंचे महल चिणासां,
बीच रखासां बारी ।
सांवरया के दरशन पासां,

लकुट कमरिया कारी ॥ ३ ॥
जोग करन को जोगी आये,
तप करने संन्यासी ।
नाम जपन को साधु आये,
बृन्दावन के वासी ॥ ५ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर
ऐसो गहर गंभीर ।
ग्वालिनी को दर्शन दीजो,
तट जमना के तीर ॥ ४ ॥

भजन ।

नहीं ऐसो जन्म बारंबार
क्या जानूं कछु पुन्य प्रकटे मानुसा अवतार ।
बढ़त पल२ घटत छिन छिन चलत न लागे बार
बिरछा के ज्यों पात टूटे लगे नहीं पुनि डार
भवसागर अति जोर कहिये विषम ओंघी धार
सुरत का नर बांधे बेड़ा बेग उतारो पार ।
साधु सन्तां ने महंतां चलत करत पुकार ।
दास मीरां लाल गिरिधर जीवना दिन चार ।

भजन ।

नाड़ी ह न जाने बैदा बड़ो अनारी जी ॥टेक॥
काली २ कोयल बोली अम्बुआ की डाली जी
बोल तो रसीला बोलै सांवरा की प्यारी जी
बूटी तो भूठी भई ओंखयां निकारीजी ।
तुम घर जाओ बैदा म्हारे पीड़ भारीजी २
द्वारका में बैद बसे उसकी मैं प्यारी जी ।
वही म्हारी पीड़ जाने बड़ो उपकारी जी ॥ ३
मीरांके प्रभु गिरधरनागर हरिचरण चितधारीजी
तुमतो सच्चे साहिब मीरां तो तुम्हारी जी ४

भजन ।

मन रे परसि हरि चरण ॥ टेक
सुभग शीतल कमल कोमल त्रिविध ज्वाला हरन
जे चरण प्रहलाद परसे इन्द्र पदवी धरण ॥१
जिन चरण ध्रुव अटल कीनो राखि अपने शरण
जिन चरण ब्रह्माण्ड भेट्यो नख शिखां श्रीभरण
जिन चरण प्रभु परस लीनो तरी गौतम घरन
जिन चरण कालिहि नाथ्यो गोपलीला करण
जिन चरण धरियो गोवर्धन राख मघवा हरण
दास मीरां लाल गिरधर अगम तारन तरन

भजन ।

मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरा ना कोई ॥टेक
जाके शिर मोर मुकुट मेरो पति सोई
शंख चक्र गदा पद्म कण्ठ माल सोई ॥ १ ॥
तात मात सुत न भ्रात आपनो न कोई ।
छांड दई कुल की कान क्या करेगा कोई ॥२
सन्तन संग बैठ २ लोक लाज खोई ।
अब तो बात फैल गई जानै सब कोई ॥ ३ ॥
अंसुवन जल सींच सींच प्रेम बेल बोई ।
मीरां प्रभु लगन लागी होनी हो सो होई ॥४

योग के अष्टांगों का वर्णन ।

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ।

चित्त की वृत्तियों का निरोध योग है ।

यमनियमासनप्राणायाम-
प्रत्याहारधारणाध्यानसमा-
धयोऽष्टावङ्गानि

योग के यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि आदि आठ अङ्ग हैं इन का यथा क्रम से वर्णन किया जाता है ।

अहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्या
परिग्रहा यमाः

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह पांच यम कहाते हैं ।

शौचसन्तोषतपस्वाध्या-
येश्वरप्रणिधानानि नियमाः

शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान यह पांच नियम हैं । सब कर्म, प्राण, आत्मा ईश्वर में समर्पण करना प्रणिधान है ।

तत्र स्थिरसुखमासनम्

जिस में सुख पूर्वक शरीर व मन स्थिर हो वह आसन है । चौरासी लक्ष जीया जून हैं उनके जो बैठने की तर्ज़ हैं वह सब आसन हैं । चौरासी लक्ष आसनों में से चौरासी छांटे और उन में से सिद्धासन और पद्मासन ।

श्वासप्रश्वासयोर्गतिवि-
च्छेदः प्राणायामः

श्वास और प्रश्वास की गति का रोकना प्राणायाम है ।

स्वविषयासम्प्रयोगे चित्त-
स्य स्वरूपानुकारवेन्द्रियाणां
प्रत्याहारः

विषयों से चित्त के हटने पर चित्त के अनुसार इन्द्रियों का होना प्रत्याहार है ।

देशबन्धः चित्तस्य धारणा ॥

चित्त को किसी देश में बान्धना धारणा है ।

तत्र प्रत्ययैकतानता
ध्यानम्

धारणा में प्रत्यय बुद्धि वा चित्त की एकाग्रता, ध्येय मात्र में चित्त का मग्न रहना तथा अन्य विषयों में न जाना ध्यान है ।

तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूप शून्यमिव समाधिः

स्वरूप शून्य होने के समान ध्येयाकार भासित होना समाधि है ।

इन का फल ।

अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः ।

अहिंसा की दृढ़ स्थिति में योगी के समीप में वैर का त्याग होता है ।

सत्यप्रतिष्ठायां क्रिया फलाश्रयत्वम् ।

सत्य की दृढ़ स्थिति में फल का आश्रय होना सिद्ध होता है । अर्थात् योगी के वाक्) मनोरथ, क्रिया फल के आश्रय होते हैं ।

अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम् ।

चोरी न करने की प्रतिष्ठा में सब दिशा रत्न स्थान होते हैं ।

ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायां वीर्यलाभः

ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा सामर्थ्य में प्राप्त होता है ।

अपरिग्रह स्थैर्ये जन्मकथन्ता सम्बोधः ।

विषयों को त्याग, जितेन्द्रिय पन की दृढता में अपने जन्मान्तर के भेदों का ज्ञान होता है ।

शौचात्स्वांगजुगुप्सापरैरसंसर्गः ।

शौच से अपने अङ्गों में घृणा और पर के अङ्गों के साथ संयोग करने की प्रवृत्ति नहीं होती है ।

सन्तोषादनुत्तमसुखलाभः ।

सन्तोष से जिस से उत्तम अन्य सुख नहीं है ऐसा सुख प्राप्त होता है ।

कायेन्द्रियसिद्धिरशुद्धिक्षयात्तपसः ।

तपसे अशुद्धि के नाश होने से शरीर व इन्द्रियों की शुद्धि होती है ।

स्वाध्यायात् इष्टदेवता सम्प्रयोगः ।

स्वाध्याय से इष्ट देवता का सम्प्रयोग (साथ) होता है ।

समाधिसिद्धिरीश्वर प्रणिधानात् ॥

ईश्वर में सब भाव समर्पण करने से समाधि को प्राप्त होता है ।

क्लेशकर्मविपाकाशैरपरा

मृष्टः पुरुषःविशेषईश्वरः।

क्लेश, (अविद्या, अस्मिता, राग द्वेष और अभिनिवेश) कर्म, विपाक (कर्मफल) आशयों (संस्कार) से रहित पुरुष विशेष ईश्वर है।

तस्य वाचकः प्रणवः।

इसका नाम ओंकार है।

तज्जपस्तदर्थ भावनम्।

इसका जप उसके अर्थ का भावन है। ओंकार के जपने से चित्त एकाग्र होता है और एकाग्रता में परमात्मा प्रकाशित होते हैं।

ततः प्रत्यक्चेतनाधिगमो-

ऽपि अन्तरायाभावश्च।

उससे सर्व व्यापक चैतन्य का साक्षात्कार होता है। और विघ्नों का अभाव होता है।

तत्प्रतिषेधार्थमेकतत्त्वा-

भ्यासः।

विघ्नों के नाश के अर्थ एक तत्त्वों का अभ्यास करना चाहिये।

मैत्रिकरुणामुदितोपेक्षाणां

सुखदुःखपुण्यापुण्यविषयाणां

भावनातः चित्तप्रसादनम्।

सुखी प्राणियों में मित्रता, दुःखियों में दया, पुण्य शीलों में हर्ष अपुण्यशीलों में उदासीनता भावना करने से चित्त की प्रसन्नता होती है।

प्रच्छर्दन विधारणाभ्यां वा

प्राणस्य।

अथवा प्राण के प्रच्छर्दन विधारण से। प्राण को नासिका पुट द्वारा रेचन करना (बाहर निकालना) प्रच्छर्दन है। और उसको बाहर रोक रखना विधारण है। अर्थात् प्राणायाम से पाप दूर होते हैं और पाप दूर होने से चित्त स्थिर होता है।

यथाभिमत ध्यानात् वा।

वा यथाभिमत ध्यान से। जिसको चित्त चाहे जिस में प्रीति हो उसी का ध्यान करे। यथारुचि ध्यान से भी चित्त एकाग्र होता है।

महात्माओं के वाक्य ।

हे मेरे ईश्वर ! मेरे जीवन के लबालब भरे पात्र से तू कौनसा दिव्य रस पान करना चाहता है ।

त्याग मेरे लिये मुक्ति नहीं है मुझे तो आनन्द के सहस्रों बंधनों में मुक्ति का रस आता है ।

आदमी जितना आप बिगाड़ करता है उतना दूसरे नहीं कर सकते । जो कुछ हम आप सीखते हैं उसका असर दूसरों की सीख से बढ़ कर है ।

उपदेश और अच्छी सलाह जहां से मिले आदर के साथ स्वीकार करो । देखो मोती सा अनमोल पदार्थ सीप जैसी तुच्छ वस्तु से निकलता है । जो अच्छी सलाह नहीं सुनता वह धिक्कार सुनेगा ।

अर्थ सिद्धि की दो कुंजियां हैं बुद्धि और आशा संयुक्त उद्योग । बिना इनके आदमी संसार में बढ़ नहीं सकता ।

किसी बात के निर्णय में जल्दी न करो पर जब समझ लिया तो दृढ़ संकल्प रहो करने के पहले उस काम की हानि लाभ भांति मन में तोल लो फिर उस को करो परिणाम चाहे जो हो ।

किसी काम में हाथ डालने के पहले अपने पुरुषार्थ को तोल लो बहुत ऊंचे चढ़ जाने से गिर जाने का डर और बहुत नीचे पड़े रहने से कुचल जाने का भय होता है ।

मालिक पर भरोसा करो पर ऊंट के पांव बान्ध कर रक्खो ।

जिसने किसी काम को पूरा करने का प्रण ठान लिया वह उस को अवश्य कर लेगा ।

कर्ता सब पशु पक्षियों को आहार देता है परन्तु उन की मांद में नहीं डाल आता ।

धन की मिठास उसको मिलेगी जिसने उसकी कमाई में मेहनत की कड़वाई को चक्खा है ।

किसी कठिन काम के करने में हिम्मत हार देना कायरता का लक्षण है । यदि उसे दूसरे कर सकते हैं तो तुम क्यों नहीं कमर कस कर तयार हो जाते ? कुल मालिक पर भरोसा अवश्य रक्खो जो सब उद्योग की जान है उस पर दृढ़ विश्वास रख कर आदमी

असम्भव काम कर सकता है। असम्भव का शब्द केवल मूर्खों के कोष में मिलता है।

स्वतन्त्र और अनाधीन वही कहा जा सकता है जो अपने काम के लिये दूसरे का आश्रित नहीं है।

एक से एक मिलकर ग्यारह होते हैं परन्तु अलग रहने से एक का एक ही बना रहता है। पर याद रक्खो 'एका' नाम अच्छे और नीति संयुक्त कार्यों के लिये मिलने का है। नीति विरुद्ध कार्यों लिये मिलने का नाम "गुट्ट" है।

तैमूर लंग का कथन है कि यदि तुम प्रजा को अराम देना चाहते हो तो न्याय के खड्ग को अराम न लेने दो। न्यायमें कोमलता मिली रहने से वह सोना और सुगन्ध होजाता है।

हजरत ने फ़रमाया कि एक पल का न्याय हजार वर्षके भजन बन्दगी से बढ़ कर है। कथा है कि सुलतान मालिकशाह एक नदि के किनारे सैर को उतरे थे। उनका एक मुंह लगा गुलाम था। जिसने एक सुन्दर गाय को वहां चरते हुए देख कर जिबह करा डाला और लश्कर वालों के साथ बांट खाया। जिस बुढ़िया की वह गाय थी उसके चार बच्चे उसी के दूध से पलते थे। वह इस समाचार को सुन कर दुःख के मारे पागल सी होगई। और थोड़ी देर पीछे जब बादशाह घोड़े पर सवार होकर चले तो लपक कर बाग पकड़ ली। और विलाप के साथ अपनी विपता का हाल कह सुनाया। बादशाह को सुन कर दया आई। उस गुलाम को दण्ड दिया और बुढ़िया को एक गाय के बदले कई उस से अच्छी गायें और धन दिया। बुढ़िया ने आशीष दी कि जैसे तैंने इस लोक में मुझे न्याय से सन्तुष्ट किया है मालिक तुझे परलोक में दया से मालामाल करे! जब बादशाह मरा एक ने उसे अपने स्वप्न में देखा और पूछा कि अल्लाह से कैसी निबटी? जवाब दिया कि अगर उस रांड बुढ़िया की आशिष मेरी सहायक न होती तो नरक की आग से बचने के लिये कुछ आशा न थी।

एक राजा के राज में एक गरीब बुढ़िया रहती थी। उसके झोंपड़े के पास राजा ने अपना महल बनवाया। बुढ़िया के झोंपड़े का धूंवा महल में जाता था इसलिये राजा का हुक्म हुआ कि बुढ़िया अपना झोंपड़ा वहां से हटाले। सिपाइयों ने बहुत कुछ डांटा पर बुढ़िया वहीं पड़ी रही। अन्त में राजा के सामने लाई गई। राजा ने पूछा तू झोंपड़ा क्यों नहीं हटाती? बुढ़िया बोली महाराज मैं तो आपका इतना बड़ा महल और बाग देख सकती हूं परन्तु आपको मेरी एक टूटी फूटी झोंपड़ी खटकती है। मुझ निरपराधनि की झोंपड़ी यदि आप उजाड़ देंगे तो आप के न्याय पर कलंक लगेगा। राजा लज्जित हुवा और धन के सत्कार से उसको विदा किया।

उधर भक्त ने किसी गुलाम से जो बकरी

चराता था पूछा कि क्या तू एक बकरी मेरे हाथ बेचेगा । उसने जवाब दिया कि बकरियों का मालिक दूसरा है मुझे तो इनके चराने का काम सुपुर्द है । इस पर उमर बोले कि इन का मालिक यहां तो नहीं देखता है उससे कह देना कि एक बकरी को भेड़िया उठा ले गया तब चरवाहे ने उत्तर दिया कि जो बकरी का मालिक नहीं देखता तो घट घट व्यापी मालिक तो देखता है । यह सुन कर उमर रो पड़ा ।

भलों का संग करो । कुसंग से बचो । बड़ों की आज्ञा पालन करना मनुष्य का धर्म है । बड़ों से लड़ना अपना अपमान करना है । बड़ों की सीख संसार की कीच में न फंसने के लिये लाठी का काम देती है । समझदार को चाहिये की सदा बड़े का संग करे ।

जो कोई अपनी उन्नति या कीर्ति चाहता है उसको इन अवगुणों से बचना चाहिये । अधिक सोना, ऊँघना, डर, क्रोध, आलस्य और टालमटोल ।

राज भक्ति का भारी दर्जा धर्म शास्त्र और नीति दोनों में है । राजा या बादशाह के द्रोही का लोक परलोक दोनों बिगड़ता है ।

घमण्ड या अहंकार मूर्खता का चिन्ह है ।

दूसरे की निन्दा नहीं करना, अपनी प्रशंसा नहीं सुहाती, दूसरे की प्रशंसा से हर्ष होता है, दूसरों को सुख पहुंचाना, छोटों से कोमलता और दया भाव, बड़ों से आदर सत्कार के साथ बर्तना है तथा खेल में भी किसी के साथ जो चालाकी नहीं करता वह महापुरुष है ।

यूनान का फीसागोरस पुनर्जन्म में दृढ़ विश्वास रखता था उसने कहा है कि मैं पहले जन्म में फौज का अफसर था और लड़ाई में मारा गया । उसके पता देने में एक कन्दिरा में जहां लड़ाई हुई थी उस के हथियार पड़े हुए मिले । इसीतरह अपने बहुत से चेलों के पिछले जन्मों का हाल बताया और लोगों को प्रत्यक्ष प्रमाण से निश्चय करा दिया ।

मौलाना रूम ने फरमाया है कि मैं कितने ही जन्म भोग चुका हूं ।

बुद्ध का उपदेशः- नोकरी बुद्धिमान् की करो । मूर्ख से बचो । सज्जनों के परोस में रहो । भली कामनाओं को मन में बसाओ और बुरी कामनाओं को निकालो । शान्त स्वभाव रहो । जब कोई दोष लगावे तो अपने मन को न बिगाड़ो । सम्पत्ति में फूल न जाओ और विपत्ति में भिचक न जाओ । दूसरे का माल बेईमानी से लेने या दबा बैठने की नियत न करो । जिनसे तुम्हारा जी नहीं मिलता उनसे दूर रहो । किसी को कथनी या करनी से धोखा न दो ।

पक्के धर्मी की बोली धीमी होती है क्योंकि जो अच्छे काम की कठिनता को जानता है वह अवश्य सम्भल कर बोलेगा ।

आदमी अपना दर्पण आप है । अपनी

आंख आप खोलो नहीं तो कब्र खोलेगा।

झूठी खबर न उड़ाओ। बुरे से मेल न करो। तुम्हारे शत्रु का बिछरा हुआ बैल तुम्हें मिले तो उस के घर पहुंचादो। परदेशी को न सताओ। जब खेत काटो तो थोड़ा सा बटोही के लिये भी छोड़दो। अपने परोसी के साथ अत्याचार न करो। मजूर की मजूरी रात भर रोक न रक्खो। बहरे की ठठोली न उड़ाओ। अन्धे की राह में ठोकर खाने का ढेला न रक्खो। मुखबिरी न करो। चुगली न खाओ। अपने परोसी को बुरे काम करने से हटाओ। किसी को खोटी निगाह से न देखो लग्न मुहूर्त का विचार मत करो।

बूढ़ों का खड़े होकर सत्कार और सब प्रकार प्रतिष्ठा करो। धरती को बेच न डालो

प्रेम आकर्षण या खैंच शक्ति का नाम है जिस से यह सब रचना ठैरी हुई है और मालिक आप प्रेम स्वरूप है अपने से बढ़ कर किसी को चाहना प्रेम है। जो अपने से बढ़ कर मालिक को चाहता है उस को तन, मन धन अपने प्रीतम पर वार देने में क्या शोच विचार होगा।

प्यारे अगर तू न बोलेगा तो मैं अपने हृदय को मौन से भर लूंगा, मैं चुप चाप पड़ा रहूंगा और तारों से भरी हुई रात्री की तरह प्रतीक्षा करूंगा, तेरी वाणी की सुनहरी धारायें आकाश को चीर कर नीचे की ओर बहेंगी।

लोग अपने विधि विधानों से मुझे पकड़ने के लिये आते हैं किन्तु मैं उन्हें टाल देता हूं क्योंकि मैं तो केवल प्रेम के कर कमलों में आत्म समर्पण करना चाहता हूं। मुझे आज नींद नहीं। रहर कर मैं द्वार खोलता हूं और अंधेरे में बाहर की ओर देखता हूं मैं विस्मित हूं कि तेरा रास्ता किधर है। दुःख रूपी दूत तेरे द्वार को खटखटा रहा है। उस का संदेश है कि तेरा स्वामी जागता है और रात्रि के अन्धकार में वह तुझे प्रेमाभिसार के लिये बुला रहा है। वह ऐसे समय आता जब रात्रि का सन्नाटा था। वह मेरे इतने नज़दीक आता है कि जिस की श्वास मेरे शरीर में लगती है।

मेरा छोटा सा हृदय उन के हाथों के अमृतमय स्पर्श से अपने आनन्द की सीमा को खो देता है और उस में ऐसे उद्गार उठते हैं कि जिन का वर्णन नहीं हो सकता।

संसारी जनों का प्रेम मुझे सब तरह से बान्धने का यत्न करता है और मेरी स्वतंत्रता को छीन लेता है परन्तु तेरा प्रेम जो उन के प्रेम से बढ़ कर है निराला है वह मुझे दासता की शृंखला में नहीं बांधता किन्तु मुझे स्वतंत्र रखता है।

मिश्रित उपदेश ।

ओमित्येतदक्षर मुद्गीथमुपासीत् ओमिति हि उद्गायति तस्योपव्याख्यानम् ।

ओं इस अक्षर को ऊंचे स्वर से उपासना करे । निश्चय से उद्गाता ओं को ही गाता है । उसी का यह सब व्याख्यान है ।

एषां भूतानां पृथिवी रसः पृथिव्या आपो रसः अपामोषधयोरसः ओषधीनां पुरुषो रसः पुरुषस्य वाग् रसो वाचः ऋग् रसःऋचः साम रसः साम्नः उद्गीथो रसः ।

इन चराचर भूतों का पृथ्वी आश्रय है, सार है, गति है । पृथिवी का जल, जलों का ओषधी, ओषधियों का पुरुष, पुरुष का वाणी, वाणी का ऋग्, ऋग् का सोम और साम का ओंकार सार है । 'स एष रसानां रसः तमः' वह यह रसों का रस ओंकार है । 'ओंकार एवेदंसर्वं' यह सब कुछ ओंकार है । 'तज्जपस्तदर्थभावनं, (योग सूत्र) ओंकार का जप करना और उस के अर्थ की सर्वत्र भावना करना ।

ओं अदामो पिबामो देवो वरुणः प्रजापतिः ।

ओं को खावें, ओं को ही पीवें, ओं ही देव, वरुण और प्रजापति है । ओं के जपने से स्वाभाविक ऊर्ध्व गति होती है । बार २ जपने से सिद्धि होती है और भगवान् के दर्शन होते हैं ।

प्राणस्य प्राण मुत चक्षुषश्चक्षुरुत श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो ये मनो विदुः । मनसैवानु द्रष्टव्यं नेह नानास्ति किंचन ॥ मृत्यो स मृत्यु मामोति य इह नानेव पश्यति ।

वह प्राण का प्राण है, चक्षु, का चक्षु है श्रोत्र का श्रोत्र, मन का मन है मन से ही देखना चाहिये । इस में नाना पन कुछ नहीं । मौत से वह मौत को पाता है जो इस में भेद भाव देखता है एक ही प्रकार से देखना चाहिये वह अनमेय है, ध्रुव है, स्थिर है, शुद्ध है आकाश से परे अजात्मा महान् ध्रुव है ।

× × × × ×

अथ याज्ञवल्क्यस्य द्वे भार्ये बभूवतुः मैत्रेयी च कात्यायनी च । तयोः मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी बभूव । स्त्रीप्रज्ञैव कात्यायनी ।

याज्ञवल्क्य के दो भार्या थीं । मैत्रेयी और कात्यायनी, उन में मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी थी और कात्यायनी साधारण प्रज्ञा वाली स्त्री थी । जब याज्ञवल्क्य संन्यासी होने लगे तब मैत्रेयी

को कहा कि कात्यायनी के साथ मैं तेरा निबटेरा धनादिका विभाग कर देऊं। मैत्रेयी बोली इस धन से सब पृथिवी भर कर मुझ को दी जाय तो क्या मैं अमर हो जाऊंगी? याज्ञवल्क्य ने कहा नहीं प्यारी ऐसा नहीं होने का। जैसे जिन के पास पुष्कल धन होता है वैसे ही तुम्हारा जीवन होगा अमृतत्व की आशा धन से न कर।

सा होवाच येनाऽहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्याम्। यदेव भगवान् वेद तदेव मे ब्रूहि इति॥

जब मैं इस से अमर न होऊं तो क्या करूं। जो ही भगवान् जानते हैं वही मेरे लिये कहें याज्ञवल्क्य बोले कि तुम बहुत प्यारी हो और प्यारी बात करती हो। 'भवत्येतत् व्याख्यास्यामि व्याचक्षाणस्य मे निदिध्यासस्व' मैं तेरे लिये व्याख्यान करूंगा मेरे उपदेश को निदिध्यासन कर।

न वा अरे पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति आत्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति।

अरे पति की कामनाके लिये पति प्यारा नहीं होता है किन्तु आत्मा की कामना के लिये पति प्यारा होता है।

न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवति आत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति। एवं पुत्राणां कामाय पुत्राः प्रिया न भवन्ति वित्तस्य कामाय वित्तं प्रियं न भवति। पशूनां कामाय पशवः प्रिया न भवन्ति। ब्रह्मणः कामाय ब्रह्म प्रियं न भवति। क्षत्रस्य कामाय क्षत्रं प्रियं न भवति। लोकानां कामाय लोकाः प्रिया न भवन्ति। देवानां कामाय देवाः, वेदानां कामाय वेदाः भूताना कामाय भूतानि प्रियाणि न भवन्ति न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति।

स्त्री की कामना के लिये स्त्री प्यारी नहीं होती किन्तु आत्मा के लिये स्त्री प्यारी होती है। एवं पुत्र, वित्त, पशु, ब्राह्मण, क्षत्री, लोक, देव, वेद सम्पूर्ण प्राणी आत्मा के लिए प्यारे होते हैं। सब सब की कामना के लिये प्यारे नहीं होते हैं किन्तु आत्मा के लिये सब प्यारा होता है। आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो मैत्रेय्यात्मनि दृष्टे श्रुते मते विज्ञात इदं सर्वं विदितम्।

आत्मा को देखना चाहिये, सुनना चाहिए, मानना चाहिये, निदिध्यासन करना चाहिये। अरे मैत्रेयी आत्मा के देखने, सुनने, मानने, जानने पर यह सब जाना हुआ होता है।

ब्रह्म तं परादाद्योऽन्यत्र आत्मनो ब्रह्म वेद।

ब्राह्मणत्व उस को परे हटा देता है जो आत्मा से भिन्न ब्राह्मणत्व को समझता है।

क्षत्रं तं परादाद्योऽन्यत्र आत्मनः क्षत्रं वेद।

क्षत्र उसको परे करदेता है जो आत्मा से भिन्न क्षत्रत्व को जानता है।

लोकास्तं परादुर्योऽन्यत्र आत्मनो लोकान्

वेद। एवं देवाः वेदाः भूतानि सर्व तं परादाद् योऽन्यत्र आत्मनः वेद।

लोक, देव, वेद सब प्राणि उसको नीचे गिरा देते हैं जो आत्मा से अलहदा इनको जानता है।

इदं ब्रह्मेदं क्षत्र इमे लोका इमे देवा इमानि भूतानि इदं सर्व यदयमात्मा।

यही ब्रह्म क्षत्र लोक देव वेद सब भूत हैं जो यह आत्मा है।

सर्वासामपां समुद्र एकायनं सर्वेषां स्पर्शानां त्वगेकायनं सर्वेषां गन्धानां नासिके एकायनं सर्वेषां रसानां जिह्वैकायनं सर्वेषां रूपाणां चक्षुः सर्वेषां शब्दानां श्रोत्रमेकायनं सर्वेषां संकल्पानां मन एकायनं सर्वासां विद्यानां हृदयमेकायनं सर्वेषां कर्मणां हस्तावेकायनं सर्वेषामानन्दानां उपस्थ एकायनं सर्वेषां वेदानां वागेकायनम्।

सब जलों का समुद्र एकी भाव है, सब स्पर्शों का त्वचा, सब गन्धों का नासिका, रसों का जिह्वा, रूपों का चक्षु, शब्दों का श्रोत्र, संकल्पों का मन, विद्याओं का हृदय, कर्मों का हाथ, आनन्दों का उपस्थ, विसर्गों का पायु, पथों का पाद, और वेदों का वाणी एकी भाव है।

यत्र हि द्वैतमिव भवति तदितर इतरं जिघ्रति, इतर इतरं पश्यति शृणोति अभिवदति मनुते विजानाति यत्र वा अस्य सर्वमात्मैवा भूत तत्केन कं जिघ्रेत् केनकं पश्येत् शृणुयात् अभिवदेत् मन्वीत् विजानीयात् येनेदं सर्वं विजानाति तं केन विजानीयात् विज्ञातारं अरे केन विजानीयात्।

जहाँ दूसरा होता है वहाँ दूसरा दूसरे को देखता है, दूसरा दूसरे को सूंघता है, जानता है, सुनता है और जहाँ यह सब अपना आत्मा हो जाता है वहाँ कौन किस को सुने, देखे, अभिवादन करे इत्यादि।

यद्ब्रह्मविद्यया सर्वं भविष्यन्तो मनुष्याः मन्यन्ते किं तद्ब्रह्म अवेद यस्मात्सर्वमभवत्।

ब्रह्म विद्या से सब कुछ हो जाते हैं मनुष्य मानते हैं ब्रह्मने क्या जाना जिससे वह सब कुछ होगया।

ब्रह्म वा इदमग्रासीत् तदात्मानं मेवावेद अहं ब्रह्माऽस्मीति तस्मात् तत्सर्वं मभवत्। तद्योयो देवानांप्रत्यबुध्यत स एव तद्भवत्। तथा ऋषीणां तथा मनुष्याणां तत् श्रेतत् पश्यन् ऋषिर्वामदेवः।

इससे पहले ब्रह्मही था उसने अपने आप को जाना मैं ब्रह्म हूं उस से वह सब कुछ होता भया। वह जो जो देवताओं में से जागा अविद्या दूर हुई और जाना मैं ब्रह्म हूं ब्रह्म ही होगया। वैसे ही ऋषियों मनुष्यों में जो जागा अविद्या दूर हुई और जाना मैं ब्रह्म हूं ब्रह्म ही बना गया।

प्रतिपेदेऽहं मनुरभवं सूर्यश्चेति

मैं ही मनु हुवा और मैं ही सूर्य हुवा। अब भी जो कोई मैं ब्रह्म हूं यह जानता है "स इदं सर्वं भवति" वह यह सब होता है। "तस्य ह न देवाः ना भूत्या ईशते"। उस के ऐश्वर्य को देवता नहीं रोक सकते। 'आत्मा ह्येषां स भवति' निश्चय से वह इन का आत्मा होता है।

यथ योऽन्यां देवतां उपासते अन्योसाऽन्योऽहमस्मीति न स वेद यथा पशुरेवं स देवानाम्।

जो देवता और है और मैं और हूं इस प्रकार उपासता है वह देवताओं का पशु है। 'मृत्यो स मृत्यु माप्नोति य इह नानेव पश्यति' मौत से वह मौत को प्राप्त होता है जो इस में भेद भाव देखता है।

अयमात्मा सर्वेषां भूतानां लोकः। ब्रह्म वा इद मग्रासीत् आत्मैवेद मग्रासीत्।

यह आत्मा सब भूतों का लोक है। इस से पहले ब्रह्म था तथा इस से पहले आत्मा ही था।

अयं आत्मा वाङ्मयो मनोमयः प्राणमयः। अन्यत्र मनाऽभूवं ना श्रौषं चादर्शं मनसा ह्येव पश्यति मनसा शृणोति।

यह आत्मा वाक्, मन तथा प्राणमय है। और जगह मन होने से न सुनता हूं न देखता हूं।

यत्किंच विज्ञातं वाचस्तद्रूपं, यत्किंच विजिज्ञास्यं मनसः तद्रूपं। यत्किंचाविज्ञातं प्राणस्य तद्रूपम्। वागेनं तद्भूत्वाऽवति।

जो कुछ जाना है वह वाणी का रूप है, जो कुछ जानने योग्य है वह मन का रूप है, जो अविज्ञात है वह प्राण का रूप है।

कर्मणा पितृ लोको विद्यया देव लोकः तस्मात् विद्यां प्रशंसन्ति।

कर्म से पितृ लोक को और विद्या से देव लोक को प्राप्त होता है अतः विद्या की सब प्रशंसा करते हैं।

आत्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या विज्ञानेनेदं सर्वं विदितम्।

अरे आत्मा के दर्शन से, श्रवण से, मानने से, विज्ञान करके यह सब कुछ जाना जाता है।

अयमात्मा सर्वेषां भूतानामधिपति सर्वेषां भूतानां राजा।

यह आत्मा सब भूतों का अधिपति और सब भूतों का राजा है।

इति

शाश्वत जीवन।

२ अङ्क से आगे।

(ले० श्री० रामचन्द्र जी जज एम० ए० दिल्ली।)

"आह हा! फिर क्या है हमारा विचार भी तो यही था कि करांची से ही समुद्र यात्रा आरम्भ करें। मेरा विचार है कि समुद्र के रास्ते करांची से बंबई जाएं। द्वारका जी के दर्शन भी हो जाएंगे। फिर बंबई से खुले समुद्र की हवा खाएंगे। लक्षद्वीप, माल द्वीप इत्यादि की भी सैर करेंगे। मुझे यह सुन कर बड़ा हर्ष हुआ। श्री कृष्ण भगवान् की नगरी देखने की मुझे बड़े दिनों से चाह थी। करांची से बंबई तक तट यात्रा भी विलक्षण सुनी हुई थी। मुझे ध्यान में तट से टकराती हुई लहरों की घन घोर गरज सुनाई दी। प्रातः काल और सायंकाल की ज्योति में रंगे हुए बादलों की छवि दिखाई दी समुद्र की वायु से मन यहीं बैठे प्रफुल्लित होने लगा मुझे उस समय तो यह दयाहीन करोड़पती देवता रूप दिखाई देने लगा। मैंने कहा, "मैं आप का कितना धन्यवाद करूं। समुद्र यात्रा बहुत ही रसदायक होगी। यदि आप मुझे आज्ञा दें तो मैं अपनी सखी के साथ करांची तक चली चलूं। वहाँ से फिर आपके साथ होजाऊंगी। राय लक्ष्मी दास यह सुन कर उठ बैठे और कहने लगे वाह! तो यही साधारण जैसी बात है। अगले शुक्रवार को मैं प्रातःकाल करांची स्टेशन से तुम को साथ लेलूंगा। इतना कह कर उन्होंने मेरे सिर पर प्यार दिया और मेरा मस्तक चूम कर चले गये। मेरे चलने में सात दिवस शेष रह गये थे। और इस थोड़े काल में मैंने बहुत कुछ करना था। राय लक्ष्मी दास ने मुझे फिर कोई सन्देसा नहीं भेजा। केवल इन्दुमती जी का एक पत्र आया जिस में उन्होंने इस प्रकार लिखा कि आपने बड़ी कृपा की जो हमारे साथ चलने का संकल्प कर लिया। मुझे डर है कि हमारे साथ आपका हर्ष न्यून हो जायगा। परन्तु इतना अवश्य है कि यदि आप न चलती तो हमारे आने में बहुत ही विघ्न हो जाता। साधारण प्रकार से तो ऐसे कृपाशील वचनों का सांसारिक सभ्यता में कोई भी अर्थ नहीं होता। फिर भी उन की कृपा थी जो उन्होंने इतना लिख भेजा। मुझे अपना तो कोई डर न था, ईश्वर की कृपा से मुझे शारीरिक अथवा मानसिक आलस्य का आज तक कभी अनुभव हुआ नहीं। मुझ में सुख ग्रहण सामर्थ्य विशेष थी। और मैंने जब जाने का विचार किया था तो साथ ही यह भी संकल्प कर लिया था, कि इस भ्रमण का पूर्ण

आनन्द लूंगी। मेरे जाने से पूर्व मेरी सखी सहेलियों ने जिनको समुद्र देखने की अथवा कहीं और जाने की आशा न थी, दिल खोल के हंसी ठट्ठे किये। यह स्वभाव लोमड़ी का ही नहीं बहुत सी स्त्री पुरुषाकार लूमड़ लोमड़ियाँ भी हैं। जिनको अंगूर खट्टे लगते हैं, एक ने मुझ से कहा, कल समाचार पत्र में लिखा हुआ था कि मानसून जल्दी आवेगा गर्मी बहुत पड़ी है और वर्षा में कोई सन्देह नहीं। भारत सागर में कहीं वायु का वेग हो तो बड़ा भय होता है। दूसरी बोली भारत का पश्चिमीय तट दृश्य हीन है वहां दिल कैसे लगेगा। तीसरी, जिसने कभी समुद्र देखा भी नहीं था कहने लगी कि लोग न जाने जहाज में बैठ कर क्या रस देखते हैं। न फिरने को जगह न उठने बैठने को एक ही स्थान पर बैठे २ सब थक जाते होंगे। मैंने हंस कर उनको उत्तर दिया, आप सब को मेरी दशा पर दया आनी चाहिये। आप की मति के अनुसार तो सरकार को चाहिये के जब किसी को काले पानी का दण्ड देना हो तो ऐसे पुरुष को जो जहाज में बैठा ही नहीं थोड़े दिनों के लिये जहाज बन्द करके दिया करें। अच्छा दैवेच्छा हुई तो मैं इन आपदाओं से बच कर आप को पुनः मिलूंगी। मेरी सखियां कुछ लज्जित जैसी हो गईं। उनका मुख उनके ईर्षा से आक्रान्त हृदय का साक्षी था। वह दिल में यही कहती थी कि मुझे बिना उद्यम किए बिना द्रव्य लगाये ऐसा अवसर क्यों मिल

गया चलने से पहली रात मुझे सदा याद रहेगी। वैसे देखने को तो कुछ भी नहीं हुआ। न कोई आया न कोई गया परन्तु मेरे मन और साथ ही मेरे शरीर में कुछ ऐसा उत्साह और हर्ष छाया हुआ था कि मानो किसी आनन्द स्वरूप ज्योतिमान् शक्ति ने मेरे चारों ओर प्रभा मण्डल रचा है। इस आकस्मिक चित्त संस्कार की मुझे पूर्व सूचना नहीं हुई न इसका मेरे अपने तादात्म्यक भाव से मुझे कुछ सम्बन्ध दिखाई देता था, तदपि इसका प्रभाव ऐसा व्यक्तिगत था कि मेरा हृदय उबलने लगा कि उस निराकार निरञ्जन का ऐसे पूर्ण आनन्द के लिये धन्यवाद दूं। मुझे यह ज्ञान तो होगया कि यह चित्त वृत्ति केवल आत्मा सम्बन्धी है। परन्तु इस पर मैं सहस्र सांसारिक उपहार भी न्योछावर कर देती। शोक की सत्ता कहीं लोप हो गई थी। इस समस्त विश्व में मुझे कठिन क्लेश की कल्पना दिखाई ही नहीं देती थी। इस प्रकाशमान शान्ति रूपी अम्बर से तमोद्वत्ततम के घन फट कर इतस्ततः विलीयमान हो गये थे। मैं इस समय अपने पठनालय में थी। जो छत के एक ओर उपवन के ठीक ऊपर बना हुआ था। मैं द्वार खोल कर सहन में चली गई। और वहां खड़ी हो कर रात्रि के स्वप्नाकार को स्वप्न वत् देखने लग गई। चन्द्रमा का अभी विकास नहीं हुआ था परन्तु नीलमाकार अम्बर में असंख्य कोटी २ चमकीली बिन्दियां सम्मे

सितारे की तरह टिमटिमा रही थीं । वायु किंचित् चमेली, चमेली और बेले की सुगन्ध से लदी हुई मन्द २ चल रही थी। अर्द्ध रात्रि का समय था और उस समय की गम्भीर निःशब्दता में किसी सोते हुये पक्षी का निद्रालु चहचहाना भी विघ्नकारी न था। जगत देखने को तो निद्रावश था वास्तव में तो एक सोता है तो सैकड़ों जिनका कार्य समय विधाता ने रात्रि में ही नियत किया है जागते रहते हैं। इसी अवसर मेरे कान खड़े हो गये। मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे वृक्षों में गुप्त लज्जित स्वर मधुर रागकी चेष्टा करता हुआ पवन तरङ्ग मेरे कानों तक लहराता हुआ आ रहा है। मैं समझी कि यह कोई महान् मुहूर्त है, जब मुझे मेरे चिर गृहीत सन्तोषमय यत्न का जो मैं अपनी अन्तरस्थायी इन्द्रियों की उन्नति के लिये करती चली आई थी फल मिल जावेगा। मैं अपने मार्ग में किसी पूर्ण पद पर पहुंच जाऊँगी यह बात तो मैं अपने अनुभव से सिद्ध कर चुकी थी—कि हमारी बाह्यस्थ इन्द्रियां उस शक्ति का प्रचार हैं, जो हमारे आत्मा में स्थित है। हमारी कर्णेन्द्रिय भी उस सूक्ष्म श्रवण शक्ति का निवेदन करती है। जो इतनी तीव्र है कि देव किन्नरादि के अति मन्द स्वरों को भी ग्रहण कर सक्ती है। हमारे स्थूल नेत्र उस तेजस्वी अन्तर चक्षु के साक्षी हैं जो परमात्मा की जगमगाती ज्योति को भी बिना पलक लगाये देखने का बल रखते हैं। हमारी स्थूल स्पर्श शक्ति बाहर कैसी निर्बल है। परन्तु यह उस शक्ति का प्रकाश है। जिससे जीव अपनी सम्बन्धी अव्यक्त वस्तु का ज्ञान ले लेता है। मुझे पूर्ण प्रतीक्षा थी तो भी उस समय मुझे परमानन्द की उत्कृष्ट चेतना से अधिक और कुछ प्राप्ति नहीं हुई। परन्तु फिरभी उस आनन्द की बौछार मेरे ऊपर पड़ कर मेरे रोम २ में समाती रही। मैंने सोचा कि यही बहुत है परन्तु कामना कहती थी कि इससे आगे भी कुछ और है। यह तो किसी पूर्ण फल की प्रतिज्ञा ही थी और उसका प्रकाश केवल इतना ही था जैसे श्वेत घनाच्छादित सूर्य का हो। इस गुप्त हर्ष का इस से परे और प्रकाश न हुआ। मेरी आत्मा इसी खोज में लोक परलोक तथा तारागण युक्त नभके अपार विस्तार में भटकती फिरी, फिर वहीं टिक गई, के समय आवे तो आशा पूरी हो मैं तो कई वर्षों से इसी प्रकार रास्ता देख रही थी। वर्षों से कर्म बद्ध होकर प्रार्थना कर रही थी। अहंकारोन्मत्त-हताश जन समूह की कुरूप लीला मेरे आंखों के सामने होती रही इस भूल भुलइयों में मैं शनैः शनैः खोज २ कर सत्य मार्ग को टटोलती रही मेरी बुद्धि को प्रतिक्षण जीवन के सत्य कारण के लाभेच्छा ने कटिबद्ध रक्खा। तदपि कभी कभी उस रात्री के प्रकार मुझे केवल इतना ही अनुभव हुआ कि लो कार्य सफल होगा। अब द्वैत संशय जाता रहेगा, सब भ्रम दूर हो जाएंगे, ईश्वरीय मूल

तत्व का ज्ञान हो जायगा । परन्तु किसी गुप्त शक्ति ने मुझे कभी भी पूर्ण पद पर पहुंचने नहीं दिया और यही उपदेश किया कि बस, अभी इस से आगे नहीं मैंने इस शक्ति का कभी तिरस्कार नहीं किया न उस से द्रोह किया । इस समय भी उस उपदेश का शासन मानने में मैंने कोई विलम्ब नहीं किया । जो ज्ञान का कारण नहीं मिला तो क्या हुआ ज्ञान जनित आनन्द मिल गया । इसी पर सन्तोष करके मैं लौट आई और सोनेसे पहले मैंने ईश्वर का विशेषतः धन्यवाद किया ।

आलस्य के प्रति ।

आलस्य जीवित मनुष्य की कबर है ।

"किसी भी प्रकार का कामधंधा न करना—यह कुछ आराम नहीं है"

'नष्ट हुआ द्रव्य उद्योग से फिर प्राप्त हो सकता है, बिगड़ा हुआ आरोग्य मिताहार से पुनः मिल सकता है, भूला हुआ ज्ञान अभ्यास से फिर लौट सकता है, परन्तु गया हुआ वक्त फिर किसने देखा है ?"

आलसी मनुष्य बिना दोनों सुइयों की घड़ी के सदृश है—बिना सुइयों की घड़ी चाहे चलती हो चाहे बन्द—हर समय एक सी निरुपयोगी है ।"

"कुछ भी न करना—यह दुष्कृत्य आरम्भ करने का मानों आरम्भ है ।"

जिन्हें अपना कर्तव्य कर्म नहीं सूझता शैतान (आलस्य) उन्हें काम ढूंढदेता है । "

यदि तुम प्रमादी (आलसी) हो तो समझलो कि तुम विनाश के ऐसे पन्थ पर जा रहे हो कि जिस पर ठहरने के स्थान बहुत थोड़े है—वह रास्ता नहीं है बल्कि खन्दक है ।"

"आलस्य जीवन का शत्रु और मौत का मित्र है ।"

"आलसी का मस्तिष्क शैतान का कारखाना है । और मनुष्य को शैतान बहकाता है परन्तु आलसी मनुष्य शैतान को बहकाते हैं ।"

"परिश्रम करने वाले मनुष्य की अपेक्षा आलसी मनुष्य बहुत जल्द काल के ग्रास हो जाते हैं।"

"परिश्रम ही जीवन है-रुका हुआ पानी बिगड़ जाता है-इसी प्रकार आलसी आदमी निराश हो शोक करा करता है। घड़ी को बन्द रक्खोगे तो उस पर कीट छा ही जायगा।"

"जब तक तुम एक क्षण के भीतर से भी अधिक से अधिक काम खींच न लो तब तक उसे आगे बढ़ने मत दो।"

"पड़े पड़े जंग लग कर नष्ट हो जाने की अपेक्षा काम करते हुए घिस कर नष्ट होना कहीं उत्तम है, क्योंकि इस अवस्था में चमक तो बनी रहती है।"

"आलसी पुरुष जीता मुरदा है-उसकी सारी दैवी शक्तियाँ नष्ट हो जाती हैं।"

"जो लोग काम करते हैं वही विश्राम का सुख पाते हैं और अकर्मण्य आलसी लोग दिन रात अप्रसन्न और अस्वस्थ रहा करते हैं।"

अच्छा काम करके अल्पायु होना आलसी मनुष्य के दीर्घ जीवन से कहीं बढ़ कर है।"

त्योहार का दिन, सन्ध्या के अवकाश का समय और तातील का दिन यह मनुष्य के चरित्र की कसौटी है।"

"जो तुम एक युवक का चरित्र जानना चाहो तो वह अपने अवकाश के समय में क्या करता है इस बात को ज्ञात करलो।"

"यदि कोई कहे कि आलसी भी इस संसार में बड़ा हो सकता है तो यह सर्वथा असम्भव और मिथ्या है।"

व्यर्थ इधर उधर चक्कर लगाना, मारे २ जहां तहां फिरना, बिना किसी ख़ास काम के मुहल्ले के खूट पर खड़े रहना, चाहे जहां बिना उद्देश्य खाना कोई प्रत्यक्ष काम न करना परन्तु कल अथवा परसों कुल काम एकदम कर लूंगा, ऐसी इच्छा प्रकट करना, यह आलस्य के प्रथम बाह्य चिन्ह हैं।"

'खो गया! खो गया!! खो गया!!! हाय, अमूल्य रत्न खो गया! उसके आस पास शुद्ध और प्रकाशित चौबीस बड़े बड़े हीरे जड़े थे और उस में के प्रत्येक हीरे के भीतर ६० छोटे २ जगमगाते हीरे मंढ़े हुए थे।'

'मनुष्यों की दीन हीन अवस्था में रहना अथवा धनाढ्य बनना उनके परिश्रम पर ही निर्भर है।'

आलस्य बहुत भयङ्कर है—

यदि तुम अपने मस्तिष्क के विषय में आलस्य रक्खोगे तो तुम अशक्त हो जाओगे।

यदि तुम अपने हाथों से काम न लोगे

तो तुम कङ्गाल और दुःखी हो जाओगे ॥

यदि तुम अपने पड़ोसी के विषय में दुर्लक्ष्य रक्खोगे तो तुम स्वार्थी बन जाओगे और यदि तुम अपने आत्मा के विषय में आलस्य करोगे तो तुम साक्षात् शैतान बनकर जाओगे ॥

(विश्वमित्र)

विज्ञान

हे ईश जगदाधार करुणागार,
नारायण विभो।
हे निर्विकार अपार गुण भण्डार
दुःख मोचन प्रभो।
इस अन्धकार कुमार्ग से,
वह ज्ञान दीपक दिखाइये।
हे निर्विकार निरीह निर्गुण,
निज दया दर्शाइये ॥

परमात्मा प्रकृति को आकार देकर विशेष पदार्थ बनाता है। प्रत्युत बनाता ही नहीं वरण उसे नियमानुसार रखता भी है। जो नियम जगत् में राज्य करता है वह नियम मनुष्य के जीवन में भी राज्य करता है। धर्मात्मा पुरुष पर कोई आपत्ति नहीं आसकती क्योंकि वह दुःख को कभी अनुभव ही नहीं करता। पाप की स्थिति धर्म को अधिक उज्वल करती है। त्रुटि भागों में है यदि समग्र को देखा जाय तो उस में त्रुटी नहीं। जो शब्द अपने आप में शोर प्रतीत होता है वह दूसरों के साथ मिल कर अद्भुत राग उत्पन्न करता है। जब विश्वाग्नि सारे संसार को भस्म करता है तो केवल परमात्मा की स्थिति रहती है। धर्म को धर्म के लिये पालन करना चाहिये। धर्म का तत्व यह है, कि मनुष्य अपने आत्मा को स्वतन्त्र रक्खे। जीवन एक संग्राम है पग २ पर आसुरी शक्तियां दैवी शक्तियों से युद्ध करती हैं। इस संग्राम में आसुरी भाव आपत्तियों का रूप धारण करती हैं। धीर बनो और संयम से रहो। मुख्योद्देश्य जीवन को अच्छा बनाना है। न्याय विज्ञन का मूल यही है कि इनकी सहायता से हम अच्छा जीवन व्यतीत कर सकते हैं। धर्म काम की वस्तु है किन्तु इस लिये कि यह सुख का साधन है। अपने आप में एक ही पदार्थ ढूंढने योग्य है और वह है सुख। विषयों का

दास होना हमें भविष्यत् में सुख भोगने के अयोग्य बना देता है। समग्र जीवन के लिये हमें संयम की आवश्यकता है। ज्ञानी पुरुष वर्त्तमान सुखों का त्याग करता है यदि ऐसे त्याग से उसे भविष्यत् में अधिक सुख मिल सकता है। यही नहीं वह वर्त्तमान दुःखों को भी स्वीकार कर लेता है ताकि भविष्यत् में सुख भोग सके। मनुष्य के लिये जितना सम्भव हो अपनी आवश्यकताओं को घटाना उचित है यदि मनुष्य की बुद्धि तीव्र है और उसके पास खाने पीने के लिये रोटी पानी है तो उसे देवताओं की अवस्था पर स्पृहा करने की आवश्यकता नहीं। आनन्द की उपलब्धि के लिये आवश्यकता है कि मनुष्य बहुत से टण्टों से विमुक्त रहे। गृहस्थ का मार्ग भी कांटों से ढका हुवा है। अच्छे मित्र जीवन को सुखी बनाने के लिये एक अच्छा साधन है। जितना तुम पड़ोसी का मान करते हो उतना ही अपना करो। परमात्मा उस से प्यार करता है जो अन्याय से घृणा करते हैं। मनुष्य के अन्दर एक देव शक्ति उसको प्रेरणा करता है। उस की आज्ञायें केवल आचार सम्बन्ध में ही नहीं होती किन्तु कठिन दशाओं में भी उस से सहायता मिलती है। एक काम का विचारना ही पर्याप्त नहीं परन्तु आवश्यक है कि हम इसे सोच विचार कर करें और जानें की क्यों यह काम नेक है। आचार की नींव ज्ञान पर होनी चाहिये। आचार और ज्ञान का इतना गहरा सम्बन्ध है कि यह दोनों एक ही वस्तु है। सच्चे अर्थों में कोई अच्छा काम नहीं कर सकता है। जब तक उसे उसके तत्व का ज्ञान नहीं हो और उसके विपरीत कोई पुरुष ज्ञान रखता हुवा बुरा काम नहीं कर सकता है। मद्य काल में भूल जाता है कि मद्यपान बुरा कर्म है। सदाचारी जीवन में सब से बड़ा धर्म यह है कि मनुष्य अपने आप को जाने। सच्ची तपस्या इन्द्रिय संयम और दम है। यह तब ही सम्भव है कि मनुष्य को अपने चरित्र तथा दुर्बल अंश का ज्ञान हो। हमारे अन्दर देवासुर संग्राम हो रहा है। असुर प्रत्येक की अवस्था में विशेष दुर्बल अंश को ढूंढते हैं और उस पर प्रहार करते हैं। एक मनुष्य की अवस्था में यह अंश काम दूसरे की अवस्था में क्रोध और तीसरे की अवस्था में और कोई विषय होता है। जो मनुष्य अपने आप को नहीं जानता वह अपने दुर्बल अंश को भी नहीं जानता और इन्द्रियों को वश में रखने के अयोग्य है। सुन्दर वस्तुओं से प्रेम करना, भोग शक्ति का नितान्त नाश करना। विषयों को वश में रखना उच्च आदर्श है। सुख प्राप्ति ही जीवन का आदर्श है। यदि मनुष्य विषयों पर शासन करता हुवा आनन्द प्राप्त कर सकता है तो उस में दोष नहीं। अपना जीवन कमल पुष्प के सदृश बनाना चाहिये। जो जल में रहता है पर जल उस में रच नहीं जाता। आत्मा बाह्य दशाओं से सर्वथा स्वतंत्र होना है। मनुष्य

परवश हो या आत्मवश दरिद्र हो या धनवान् स्वतन्त्रता उसके हाथ में है। एक पुरुष जिसे संसार परवश समझता है राजकीय आत्मा रख सकता है।

तालाब तथा वृक्षारोपण का फल।

(ले० श्रीमती सूरजदेवी)

तालाब बनवाने वाला पुरुष पृथ्वी अन्तरिक्ष और स्वर्ग इन तीनों लोकों में पूजनीय माना जाता है। तालाब मित्र के घर के समान उपकार करने वाला और सूर्य को प्रसन्न करने वाला है और देवताओं को पुष्ट करने वाला है तथा बनाने वाले की कीर्ति को फैलाने वाला है। इस प्रकार तालाब खुदवाना उत्तम माना जाता है विद्वान् कहते हैं कि तालाब खुदवाने से धर्म, अर्थ और काम का फल मिलता है, जिस स्थान में क्षेत्र हो और जहाँ महापुरुषों का निवास हो वहाँ तालाब खुदवाना उचित है। तथा जिस देश में तालाब खुदवाया जाता है वह तालाब उस प्रदेश में रहने वालेजरायुज, स्वेदज, अण्डज और उद्भिज इन चार प्रकार के प्राणियों का आश्रय स्थान हो जाता है, सब प्रकार के जलाशय, बावड़ी, तालाब को खुदवाने वाले उत्तम प्रकार की लक्ष्मी पाते हैं देवता, मनुष्य, गन्धर्व, पितर, सर्प, राक्षस और स्थावर प्राणी जलाशय का आश्रय लेते हैं। तालाब बनवाने के जोगुण कहे हैं और उस से ऋषियों ने जिस फल की प्राप्ति कही है वह हम पाठकों के सामने रखते हैं।

वर्षा काले तड़ागे तु सलिलं यस्य तिष्ठति।
अग्निहोत्रफलं तस्य फलमाहुर्मनीषिणः॥
शरत्काले तु सलिलं तड़ागे यस्य तिष्ठति।
गो सहस्रस्य स प्रेत्य लभते फल मुत्तमम्॥
हेमन्तकाले सलिलं तड़ागे यस्य तिष्ठति।
स वै बहुसुवर्णस्य यज्ञस्य लभते फलम्।
यस्य वै शैशिरे काले तड़ागे सलिलं भवेत्।
तस्याग्निष्टोम यज्ञस्य फलमाहु र्मनीषिणः॥
तड़ागं सुकृतं यस्य वसन्ते तु महाश्रियम्।
अतिरात्रस्य यज्ञस्यफलं स समुपाश्नुते॥
निदाघ काले पानीयं तड़ागे यस्य तिष्ठति।
वाजिमेध फलं तस्यफलं वै मुनयो विदः॥
सकुलं तारयेत् सर्वं यस्य खाते जलाशयः
गावः पिबन्तिसलिलं साधवश्च नराः सदा॥
तड़ागे यस्य गावस्तु पिबन्ति तृषिता जलम्
मृग पक्षि मनुष्याश्च सोऽश्वमेध फलं लभेत्॥
यत्पिबन्ति जलं तत्रस्नायन्ति विश्रमन्ति च
तडागे यस्य तात् सर्वं प्रेत्यानन्त्याय कल्पते॥
दुर्लभं सलिलं तात् विशेषेण परत्रवै
पानीयस्य प्रदानेन प्रीतिर्भवति शाश्वती॥

वर्षा काल में जिसके तालाब में जल रहता है, उस मनुष्य को अग्नि होत्र का फल मिलता है, यह विद्वान् कहते हैं जिस के तालाब में शरद ऋतु के जल रहता है उसको मरने के पीछे एक हजार गौवों के दान का उत्तम फल मिलता है जिसके तालाब में हेमन्त काल में जल रहता है उस मनुष्य को जिस में बहुत से स्वर्ण का दान दिया जाता है ऐसे यज्ञ का फल मिलता है। जिसके तालाब में बसन्त ऋतु तक जल रहता है, उसको अतिरात्र यज्ञ का फल मिलता है जिसके तालाब में ग्रीष्म ऋतु में भी जल रहता है, उसको अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है, इस बात को मुनि जानते हैं। जिसके खुदवाये हुये तालाब में गौवें तथा सत्पुरुष सदा जल पीते हैं वह अपने सारे कुल को तार देता है। जिसके तालाब में प्यासी गौवें जल पीती हैं और प्यासे मृग पक्षी और मनुष्य जल पीते हैं वह पुरुष अश्वमेध यज्ञ का फल पाता है। जिसके तालाब में प्राणी जल पीते हैं स्नान करते हैं तथा उसके तट पर विश्राम करते हैं वह सब तालाब खुदवाने वाले को मरण के पीछे अनन्त सुख देते हैं। जल दुर्लभ पदार्थ है और परलोक में तो विशेष दुर्लभ है, जल का दान देने से सदा रहने वाली प्रीति मिलती है तिलों का दान दो, जल का दान करो, दीप दान दो और जीवन पर्यन्त सम्बन्धियों के साथ आनन्द में रहो इन वस्तुओं का परलोक में मिलना अति दुर्लभ है जल का दान सब दानों से उत्तम है और सब दानों से श्रेष्ठ है अतः जल का दान अवश्य देना चाहिये इस प्रकार तालाब खुदवाने का उत्तम फल कहा, अब वृक्ष लगाने के सम्बन्ध में कहते हैं स्थावर प्राणियों की वृक्ष गुल्म कुश आदि लता (वृक्षों पर चढ़ने वाली गिलोय आदि), बल्ली (भूमि में फैली हुई बेल), त्वक्सार (बाँस आदि) और तिन के आदि यह छः जातियें कही हैं वृक्षों की इतनी जातियें हैं और उन के यह गुण हैं वृक्षों के लगाने वाले मनुष्य की इस लोक में कीर्ति होती है और मरने के पीछे परलोक में शुभ फल मिलता है। इस लोक में नाम फैलता है और परलोक में उसकी पूजा करते हैं तथा वृक्ष लगाने वाला देव लोक में जाता है और मरण पाने पर भी उसका नाम नष्ट नहीं होता है ॥

अतीतानागते चोभे पितृवंशं च भारत ।
तारयेद् वृक्षरोपि च तस्माद् वृक्षांश्च रोपयेत् ॥
तस्य पुत्रा भवन्त्येते पादपा नात्र संशयः ।
परलोक गतः सुभगंलोकांश्चाप्नोतिसोऽव्ययान्
पुष्पैः सुरगणान् वृक्षाः फलैश्चापि तथा पितॄन्
छायया चातिथिं तात पूजयन्ति महीरुहः ॥
किन्नरोरग रक्षांसि देव गन्धर्व मानवाः ।
तथा ऋषि गणश्चैव संश्रयन्ति महीरुहान् ॥
पुष्पिता फलवन्तश्च तर्पयन्तीह मानवान् ।
वृक्षदं पुत्रवद् वृक्षास्तारयन्ति परत्र तु ॥
तस्मात्तडागे सद् वृक्षा रोप्याः श्रेयोऽर्थिना सदा
पुत्रवत् परिपाल्याश्च पुत्रास्ते धर्मतः स्मृता ॥
अतडाग कृत् वृक्षरोपि इष्ट यज्ञश्च यो द्विजः ।

एते स्वर्गे महीयन्ते ये चान्ये सत्यवादिनः ।
तस्मात्तडागं कुर्वीत आरामांश्चैव रोपयेत् ।
यजेच्च विविधैर्यज्ञैः सत्यं च सततं वदेत् ॥

वृक्ष लगाने वाला अपने पिता से पहिले तथा भविष्य में होने वाले वंशजों को तार देता है अतः वृक्ष लगाने चाहियें । और वृक्ष लगाने वाले के यहां पुत्र उत्पन्न होते हैं इस में सन्देह नहीं है और वृक्ष लगाने वाला मरण के पीछे स्वर्ग भेजा जाता है तथा अविनाशी लोकों को पाता है । वृक्ष पुष्पों से देवताओं को तृप्त करते हैं फलों से पितरों को तृप्त करते हैं और छाया से अतीथियों का सत्कार करते हैं । किन्नर, सूर्य, राक्षस, देवता, गन्धर्व, मनुष्य और ऋषि वृक्षों का आश्रय लेते हैं । पुष्प और फलों वाले वृक्ष इस जगत् में मनुष्यों को तृप्त करते हैं वृक्षों का दान देने वाले को वृक्ष पुत्र की समान परलोक में तारते हैं अतः कल्याण चाहने वाले मनुष्यों को सदा तालाब के किनारे उत्तम वृक्ष लगाने चाहियें और पुत्र की समान उनको बड़ा करना चाहिये क्योंकि लगाये हुये वृक्षधर्मानुसार पुत्र कहलाते हैं । तालाब खुदवाने वाले वृक्ष लगवाने वाले यज्ञ कराने वाले ब्राह्मण और सत्यवादी मनुष्य स्वर्ग में पूजे जाते हैं । अतः मनुष्य को तालाब खुदवाने चाहियें वृक्ष लगवाने चाहियें । अनेक यज्ञ करने चाहियें और सत्य बोलना चाहिये

भजन ।

मोरी लागी लटक गुरु चरणन की । टेक
चरण बिना मुझे कछु नहीं भावे,
झूठी माया सपनन की ॥ १ ॥
भवसागर सब सूख गया है,
फिकर नहीं मुझे तरनन की २॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर,
उलट भई मोरे नयनन की ॥३॥

भजन ।

अरी पेरी उदां लागी का नाम न ले ॥टेक॥
जल से प्रीति करी मछली ने,
बिछुरत प्राण तजे ॥ १ ॥
मृगों की प्रीति लगी नादों से,
सन्मुख सेल सहे ॥ २ ॥
दीपक से प्रीति लगी है पतंग की,
बार फेर जिया दे ॥ ३ ॥
मीरां की प्रीति लगी है सन्तों से,
गुरु चरणों चित दे ॥ ४ ॥

भजन ।

गो म्हारे साधो राम नाम धन खेती ॥टेक॥
मन कर हरिया सुरत बरधिया,
ज्ञान ध्यान दोउ जोती ।
ओ३म् नाम को बीज जो बोया,

उपजी नव निध खेती ॥
ध्रू बोई प्रहलाद ने बोई,
उन की हुई है अगेती ।
काम क्रोध के जो नर वश हैं,
उनकी पड़त पछेती ॥
चोर न चोरै राज न डांडै,
पेज न लगत टके की ।
इस खेती में बहुत नफा है,
कहियो संतन सेती ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर,
आन मिलो हित सेती ॥

भजन ।

कैसे जीऊंरी मेरी माई,
हरि बिन कैसे जिऊंरी ॥ टेक ॥
उदक दादुर मीनवत है जल से ही उपजाई ।
पल एक जल कूं मीन बीसरे तड़फत मर जाई ॥
पिया बिन पीली भई रे बाला,
ज्यों काठ घुन खाई ।
औषध मूल न संचरे रे बैदा फिर २ जाई २॥
उदासी होय बन बन फिरूं रे बिथा तन आई
दास मीरां लाल गिरधर मिल्या है सुखदाई ॥

भजन ।

बिर यो तो रंग गाढ़ा लगा,
मेरी माय दूजा नाहीं सुहाय ॥ टेक ॥
पीरा प्याला अमर रस का,
चढ़ गई घूम घमाय

यो तो अमल म्हारो कबहू न उतरे,
कोट करो न उपाय ॥ १ ॥
सांप पिटारो राणाजी भेज्यो,
यो मेड़तणी गल डार ।
हंस हंस मीरा कंठ लगायो,
यो तो म्हारे नौसर हार ॥ २ ॥
विष को प्यालो राणाजी भेज्यो,
यो मेड़तणी ने प्याय ।
कर चरणामृत पी गई रे,
गुण गोविन्द रा गाय ॥ ३ ॥
पीया प्याला नाम का रे,
और न रंग सुहाय ।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर,
काचो रंग उड़ जाय ॥ ४ ॥

भजन ।

सो राणी जी तैं ज़हर दियो म्हाने जानी ॥
भर २ दिये ज़हर के पियाले,
हैगयो अमृत पानी ॥ १ ॥
जब लग सोना कसिये नाहीं,
होत न बारा बानी ॥ २ ॥
मोय भरोसा श्याम सुन्दर का,
मेरी घटन न कानी ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर
चरण कमल लिपटानी ॥ ४ ॥

—०००—

समाचार।

जर्मन राजधानी बर्लिन के एक डा० एल-सनरने एक ऐसा यन्त्र बनाया है जिस से पेट के भीतर का फोटो अच्छी तरह से खींचा जा सकता। उसका पूरा विवरण उक्त डाक्टर ने जर्मन मेडिकल सोसाइटी के सामने अपने एक व्याख्यान में बताया है। उस व्याख्यान में उन्होंने बताया है कि अभी तक ऐक्सरे के द्वारा ही जीवित आदमी के पेट के भीतर का हाल जाना जाता था, लेकिन अगर इसका फोटो खींचा जा सके तो बहुत अच्छा हो। डा० एलसनर एक लम्बा नल काम में लाते हैं जिसे वे आदमी के मुंह की राह पेट तक पहुंचा देते हैं। नल के सिरे पर छोटी सी बिजली की रोशनी और पेरिस्कोट का शीशा होता है नल के दूसरे सिरे पर फोटो खींचने का कैमेरा होता है जिसका लैंस इतना बड़ा होता है कि उसमें शीशे पर पड़ा हुआ पेट के भीतरी भाग का चित्र आ सके। पेट के भीतरी अवयवों के सात चित्र बड़ी शीघ्रता से खींचे जा सकते हैं। पीछे छोटे चित्र बड़े आकार में बना लिये जाते हैं। इस तरह पेट के भीतर के रोग का पूरा २ हाल इस नये यन्त्र द्वारा बड़ी सरलता से जाना जा सकता है।

शाहबाद कोट में एक ऐसी लड़की है जिसके हाथ बिलकुल नहीं हैं। सभी हाथ से करने के काम वह अपने पैरों द्वारा करती है लड़की की उम्र इस समय ६॥ वर्ष की है।

"लीडर" में पंडा के पार्लीक्यूटिंग इन्स-पेक्टकर श्रीपदमसिंह ने एक समाचार प्रका शित कराया है कि मथुरा जिले के पटियाली गाँव के एक रिटायर्ड डिप्टीकलेक्टर की ७— वर्ष हुए मर गई। उसके कुछ समय बाद समीप के एक गाँव में एक ब्राह्मण के यहां एक लड़की पैदा हुई। वह ब्राह्मण भिक्षा वृत्ति से अपना निर्वाह करता था। ४-५ वर्ष की उम्र होने पर लड़की ने अपने पिता को भीख माँगने से मना किया और उसे पटियाला के डिप्टीसाहब के घर में जहाँ बहुत सा धन गड़ा था, ले चलने को कहा, ब्राह्मण लड़की को डिप्टी साहब के पास ले गया। लड़की ने उन्हें अपना परिचय दिया और डिप्टीसाहब के पूछने पर मुहल्ले की स्त्रियों को पहचाना तथा कुछ वैवा-हिक रहस्यों को भी प्रकट किया। लड़की ने उन स्थानों को भी, जहाँ धन गड़ा था, बत-लाया। गड़े हुए धन का कुछ भाग ब्राह्मण को भी मिल गया।

लखनऊ के सिविल वेटेरीनरी विभाग

के रिसर्च स्टेशन में एक बड़ा ही अद्भुत जीव जाँच के लिये भेजा गया है। इसका चेहरा छाती बांह और पैर आदमी के जैसे और गाल बड़े फूले हुए हैं; पूंछ रीछ की सी, कान बकरे के से और चमड़ा लाल है। शरीर पर बाल नहीं केवल सिर पर बालों का गुच्छा है।

संसार भर में सब से बड़ा रेलवे प्लैट-फार्म सोनपुर (भारतवर्ष) का है। इसकी लम्बाई २४५७ फीट है। मैञ्चेस्टर का प्लैटफार्म २१६७ फीट; गोरखपुर का २११८ मेलबोर्न का २००६ तथा बरौनी और गोंड़ा के प्लेटफार्म दो दो हजार फीट लंबे हैं।

दक्षिण अफ्रिका में एक नरमुण्ड मिला है जो अब तक मिले हुए सभी नरमुण्डों से बड़ा है। यह एक अफ्रिका वासी का बताया जाता है, जो थोड़े ही समय पहले मरा है। इस खोपड़ी की लम्बाई ८॥ इञ्च है। विद्वानों का मत है कि इस से मनुष्य जाति का मूलस्थान अफ्रिका ही समझा जाता है।

यदि समस्त लन्दन शहर के कूड़े कर्कट को आधुनिक वैज्ञानिक यन्त्रों में जलाया जाय तो अनुमान किया जाता है कि उससे तीन करोड़ रुपये की बिजली की शक्ति प्रतिवर्ष तैयार हो सकती है।

फ्रांस के १५० अलमस्त विद्यार्थी अपने शरीर का खून बेचकर अपना पेट भरते हैं। किसी अशक्त रोगी के लिये ३० बूंद खून देने का ४५) लेते हैं।

अमृतसर के पास वाचाटल के पास एक बीकानेरी स्त्री के गर्भ से एक बन्दर का बच्चा पैदा हुआ है। बच्चे के हाथ पैर और मुंह बन्दर के से हैं इस बच्चे को देखने के लिये दर्शकों की भीड़ लगी रहती है। यह बच्चा पीछे मर गया। एक आदमी इसको खरीदना चाहता था परन्तु इसके पिता ने स्वीकार नहीं किया।

मौजा तुमरी जिला कौंच में एक नाई के घर ऐसा अद्भुत बालक पैदा हुआ है कि उसके एकही हाथ है। लड़का अभी दो महीने का है।

भक्ति के नियम।

१. भगवान् की भक्ति का प्रचार करना गो रक्षण और उस के लिए गोचर भूमि बढ़वाना, जलाशय बनवाना, मनुष्य मात्र के लिए शिक्षा का प्रचार करना। वैदिक अनुभूत औषधियों का प्रचार करना, ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा कर शान्ति व प्रेम बढ़ाना। सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जाग्रत करना। राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना।

२. यह पत्र प्रतिमास की पूर्णिमा को प्रकाशित हुआ करेगा।

३. वार्षिक चन्दा सर्वसाधारण से २) होगा।

४. जो महानुभाव २५) रुपया देंगे वह पत्र के संरक्षक और ५) देने वाले सहायक होंगे।

५. अश्लील और अपरिचित विज्ञापन नहीं लिए जावेंगे।

६. लेखों को प्रकाशित करना और और घटाना व बढ़ाना सर्वथा सम्पादक के अधिकार में होगा।

७. लेख सम्बन्धी पत्र व्यवहार सम्पादक के नाम से और विज्ञापन व चन्दा सम्बन्धी पत्र व्यवहार मैनेजर भक्ति के नाम से होना चाहिए।

विषय सूची।

विषय.		पृष्ठ.
१.	मंगलाचरण	१.
२.	पिण्डे सो ब्रह्मांडे (ले० श्री पं० रघुनाथजी नरेला)	४.
३.	भजन	७.
४.	योग के अष्टांगों का दर्शन	९.
५.	महात्माओं के वाक्य	१२.
६.	मिश्रित उपदेश	१६.
७.	शाश्वत जीवन (ले० श्रीरामचन्द्र जैन दिल्ली)	२०.
८.	आलस्य के प्रति	२३.
९.	विज्ञान	२५.
१०.	तालाब तथा वृक्षारोपण का फल (ले० श्रीमती सूरजदेवी	२७.
११.	भजन	२८.
१२.	संसार समाचार	३१.

बिना गुरु के सिद्धान्त कौमुदी।

भाषाफक्किका प्रकाश॥

इस पुस्तक में बहुत ही सरल भाषा में तथा प्रश्नोत्तर के रूप में सिद्धान्त कौमुदी की गूढ़ फक्किकाओं को समझाया गया है। विद्यार्थियों के बड़े लाभ की पुस्तक है इस से विद्यार्थी लघु पढ़ कर स्वयं सिद्धान्त कौमुदी पढ़ सकते हैं। मूल्य केवल ॥)

ज्ञानधर्मोपदेश।

इस छोटी सी पुस्तक में वेद शास्त्र तथा धर्म का सार संगृहीत है और वेदान्त की उत्तम कविताओं का संग्रह है। मूल्य ~)॥।

वेदोपनिषत्।

इस पुस्तक में ईश, कठ, केन, मुण्डक, और माण्डूक्यादि उपनिषदों तथा वेदों के उत्तम २ मन्त्रों का अर्थ सहित संग्रह है। मूल्य ।~)

अष्टोत्तरशतमन्त्रमाला।

इस पुस्तक में गीता और उपनिषदों से १०८ बहुत ही उत्तम श्लोकों का संग्रह है। यह नित्य पाठ करने की पुस्तक है। मूल्य ~)।

भगवद्गीता संस्कृत तथा भाषा टीका सहिता।

इस पुस्तक में प्रथम मूल है तत्पश्चात् अन्वय तथा सरल संस्कृत में प्रत्येक मूल के पर्याय हैं फिर सरल हिन्दी भाषानुवाद है। यह गीता के जिज्ञासु तथा कथक्कड़ों के बहुत ही लाभ की पुस्तक है पृष्ठ संख्या ४२६ होने पर भी हमने भक्त जनों के हितार्थ मूल्य केवल ॥~) ही रक्खा है शीघ्रता कीजिये केवल १००० ही प्रतियाँ हैं जिन के अति शीघ्र ही निकल जाने की आशा है।

सत्य शब्द संग्रह।

इस पुस्तक में महात्माओं की उत्तम २ वाणियों का संग्रह है। वेदान्त विषय की उत्तम कोटि की कवितायें कवित्त तथा सवैये हैं। अन्त में विचार सागर है। यह भक्त जनों के लिये पाठ की बड़ी ही उत्तम पुस्तक है मूल्य ।~)

मुद्रक तथा प्रकाशक भमानन्द ब्रह्मचारी "भक्ति प्रेस" आश्रम रामपुरा रेवाड़ी।